International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(I), October - December, 2024, pp. 93-97

भारत में नारी सशक्तिकरण और लोहिया के विचार

हेमलता रौतवार*

सार

डॉक्टर राम मनोहर लोहिया भारत के प्रमुख आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक थे, उन्होनें भारत के विभिन्न स्वाधीनता आन्दोलन और समाजवादी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। गाँधीवाद से प्रेरित और भारतीय समाजवाद की आधारशिला रखने वाले लोहिया का जीवन पीड़ित, शोषित और दुखी जनता को समर्पित था। वे जीवन पर्यंत प्रयासरत रहे की भारतीय समाज की रूढ़ियों को समाप्त कर आम व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सके। भारतीय समाज का आधा हिस्सा जो हमेशा से पीड़ित और शोषित रहा है के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए उन्होने अपना जीवन समर्पित किया। नारी सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं को ना केवल प्रतिस्थापित किया बल्कि तात्कालिक समाज उन मूल्यो को जीवन में उतारे उसके लिए अथक प्रयास भी किये। किन्तु वर्तमान दौर में भी नारी सशक्तिकरण का वो पौधा व्रक्ष नहीं बन पाया है। लोहिया जी ने भारतीय नारी के लिए सम्पूर्ण बराबरी पर ज़ोर दिया जिसमे मानसिक,सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक बराबरी शामिल है। नारी सशक्तिकरण का प्रथम और सबसे प्रमुख सोपान है मानसिक बराबरी। जब तक समाज में नारी के प्रति भेदभाव की मानसिकता खतम नहीं होगी तब तक प्रयास सार्थक परिणाम नहीं दे पाएंगे। लोहिया जी ने नारी उत्थान हेतु नर नारी समानता के हर पहलू पर मौलिक विचार दिये है इन विचारों को धरातल पर उतारकर ही हम नारी सशक्तिकरण के पौधे को वट व्रक्ष बना सकते है जिसकी शीतल छाया में ही भारतीय समाज उन्नति कर पायेगा।

शब्दकोशः *समाजवाद, सशक्तिकरण, एनसीआरबी, 'गरिमा के अधिकार', स्वतन्त्रता।*

प्रस्तावना

भारतीय आजादी की लड़ायी में हर एक भारतीय ने अपना योगदान दिया और देश को आजादी मिली। किन्तु भारतीय समाज का एक हिस्सा अब भी गुलामी, अन्याय और असमानता का दंश झेल रहा है। अँग्रेजी हुकूमत से तो आजादी मिल गयी किन्तु सदियों से चली आ रही रूढ़ियों का अत्याचार, असमानता, मानसिक गुलामी, आर्थिक और भावनात्मक गैरबराबरी आज की भारतीय नारी अपने समाज में ही झेल रही है। आजादी के पूर्व और बाद में भी विभिन्न समाज सुधारक विचारक और वर्तमान में भी सरकारें इस दशा को सुधारने में प्रयासरत तो हे किन्तु परिणाम अपेक्षानुरूप नहीं मिले है। सरकार, संसद, विधानसभा, विधान परिषद, न्यायपालिका आदि सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाले उच्च पदों पर महिलाओं की भागीदारी बहुत ही कम है। वर्तमान भारत में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए, हम कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दें, जैसेः

---

* रिसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

- **शिक्षाः** भारत में महिलाओं की शिक्षा का स्तर अभी भी कम है, जो उनके विकास और सशक्तिकरण के लिए एक बाधा है। भारत में महिलाओं का साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है, जो पुरुषों के 82.14 प्रतिशत के मुकाबले काफी कम है।
- **रोजगारः** भारत में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी भी बहुत कम है, जो उनकी आर्थिक स्वावलंबन और समाज में भागीदारी को प्रभावित करती है। भारत में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी 20.3 प्रतिशत है, जो विश्व के अन्य देशों के मुकाबले बहुत कम है।
- **राजनीतिः** भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी भी अभी अपर्याप्त है, जो उनकी नेतृत्व और प्रतिनिधित्व को कमजोर करती है। भारत में महिलाओं का लोकसभा में 14.36 प्रतिशत, राज्यसभा में 10. 32 प्रतिशत और विधानसभा में 9.17 प्रतिशत प्रतिनिधित्व है, जो संयुक्त राष्ट्र के लक्ष्यों से काफी पीछे है।
- **महिलाओं पर अपराध :** 'एनसीआरबी रिपोर्ट 2022 में सामने आया है कि महिलाओं के खिलाफ अपराध की दर (प्रति एक लाख जनसंख्या पर घटनाओं की संख्या) 2021 में 64.5 प्रतिशत से बढ़कर 2022 में 66 प्रतिशत हो गई है। राष्ट्रीय महिला आयोग ;छॅब्द्ध की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक, साल 2023 में देश भर से पूरे साल में महिलाओं के खिलाफ अपराध की 28,811 शिकायतें मिलीं। आंकड़े हैरान कर देने वाले है, क्योंकि आयोग में ये शिकायत **'गरिमा के अधिकार'** (Right to dignity) कैटेगरी के अंतर्गत दर्ज किया गया है।

ये आंकड़े एक तरफ महिलाओं की वर्तमान समय में सोचनीय स्थिति को उजागर करती है वही दूसरी ओर महिला सशक्तिकरण की नितांत आवश्यकता को रेखांकित करती है।

नारी सशक्तिकरण और वर्तमान परिस्थियों को सुधारने में जो हमारे लिए संजीवनी का कार्य कर सकते है वह है लोहिया जी के नारी समानता के विचार जिन्हें आत्मसात कर सिर्फ नारी ही नहीं समाज का भी उत्थान होगा और देश उन्नति की राह पर आगे बढेगा ।

लोहिया जी समता के मौलिक अधिकार के प्रबल समर्थक रहे है। लोहिया जी का मानना था की नारी सशक्तिकरण के लिए सम्पूर्ण समानता ही एक मात्र साधन है और स्वतन्त्रता और न्याय के बिना समानता प्राप्त नहीं की जा सकती । इस सम्पूर्ण समानता मैं सामाजिक समानता राजनीतिक समानता आर्थिक समानता निहित है। इन्हें प्राप्त कर ही हम प्रगतिशील समाज और सशक्त नारी के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है।

नारी सशक्तिकरण और लोहिया के विचार

नारी सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के लिए लोहिया के विचार अत्यंत मौलिक थे, जो आज की महिला के लिए भी उतने ही महत्वपूर्ण है जितने कि उनके समय थे। लोहिया जी का मानना था की सामाजिक समानता लाने के लिए सर्वप्रथम मानसिक रूढ़ियों को तोड़ना नितांत आवश्यक है। उनका मानना था कि भारतीय समाज में नारी को अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता का अधिकार नहीं मिलता है। समाज में नारी को एक अधूरी और अशक्त व्यक्ति के रूप में देखा जाता है, जिसे पुरुषों की इच्छाओं और आदेशों का पालन करना पड़ता है। वे नारी की मानसिक गुलामी को एक सामाजिक और राजनीतिक समस्या मानते थे, जिसका समाधान केवल नारी के जागरूकता और संघर्ष से ही हो सकता है।

लोहिया जी ने नारी की मानसिक गुलामी के विरुद्ध अपने विचारों को मजबूती से प्रकट किया है। लोहिया जी कहते है कि भारतीय नारी कैसी हो? इस पर नर नारी समानता पर उनका निबंध **"द्रोपदी या सावित्री"** सबसे अधिक प्रसिद्ध रहा है। इसमें उन्होंने लिखा है कि हिंदुस्तान की नारी का आदर्श द्रोपदी को होना चाहिए सीता या सावित्री नहीं क्योंकि द्रोपदी बहुत ज्ञानी, समझदार, साहसी, बहादुर व हाजिरजवाब महिला थी। जिसने कभी भी किसी पुरुष से दिमागी हार नहीं मानी। इस लेख में लोहिया जी ने कहा था कि यद्यपि सीता व सावित्री पौराणिक सम्मानजनक व्यक्तित्व हैं जो निष्ठा और शुद्धता के गुणों को दर्शाते हैं। परंतु आज की भारतीय

नारी के लिए केवल यही गुण आदर्श नहीं हो सकते। उन्होंने सीता व सावित्री के पतिव्रत धर्म का महिमामंडन करने वालों से सवाल किया कि क्यों हमारे इतिहास में केवल पत्नी व्रत को बार–बार दोहराया गया है और पुरूष को कहीं स्त्री हेतु बाध्य नहीं किया गया। इसी तरह लोहिया को पद्मिनी के जौहर की बजाए रजिया की बहादुरी पसंद थी। किसी भी समाज की उन्नति उसकी नारी के सशक्तिकरण के समानुपाती होती है। भारतीय समाज एवं राष्ट्र को अगर विश्व पटल पर सबसे आगे पहुंचना है तो भारतीय नारी को सशक्त और सक्षम होना ही होगा और हम सबको मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि नारियों को समान अधिकार, समान स्वतंत्र जीवन हर स्तर पर मिले।

आदर्श नारीत्व की अवधारणा जो कि पतिव्रत धर्म के इर्द–गिर्द घूमती है वह भारतीय नारी के लिए संपूर्ण नहीं हो सकती। लोहिया जी के अनुसार रामराज्य की परिकल्पना बिना सीता अधूरी है। इसलिए रामराज्य की जगह सीता रामराज्य ही भारत में घर घर कायम होना चाहिए।

लोहिया जी ने कहा था की पुरुष एवं स्त्री दोनों के नाम के आगे केवल श्री का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। क्योंकि श्रीमती का इस्तेमाल वही लोग करते हैं,जो दुनिया में मर्दों का राज्य रखना चाहते हैं उनके अनुसार भारतीय महिलाए अपनी गरिमा आजादी एवं स्वायत्तता चाहती हैं ना कि नैतिकता और देवी का दर्जास समाज तभी समृद्ध होगा जब समाज की महिलाएं सशक्त होंगी।

लोहिया जी औरत और मर्द की गैर बराबरी को सभी किस्म की गैर बराबरी और अन्याय का आधार मानते हैं। उनका कहना है कि नर नारी की गैर बराबरी समाज में फैली हर गैर बराबरी और नाइंसाफी की, बुनियाद की चट्टाने है। लोहिया जी स्त्रियों के पर्दे में रहने और पुरुष द्वारा उनके शोषण या अनादर के घोर विरोधी थे। उन्होंने समाज में व्याप्त हर उस संस्कृति नैतिकता, परंपरा और मूल्य का विरोध किया जो स्त्री को पराधीन बनाने की नीयत रखते हैं। सप्त क्रांति में लोहिया जी के वैचारिक दर्शन में दोनों पक्ष दिखते हैं जो स्त्रियों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को दिखाते हैं तथा समाज की दकियानूसी प्रथाओं का विरोध करते हैं। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि धर्म,राजनीति, व्यापार और प्रचार सभी मिलकर उसकी जड़ को संजोकर रखने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है। लोहिया भारतीय संस्कृति एवं उसके मूल्यों के विरुद्ध नहीं थे अपितु वह संस्कृति में फैले ऐसे फूहड़पन के खिलाफ थे जिसे नैतिकता का चोला पहनाकर महिलाओं पर थोपा गया है। यदि वास्तव में समाजवाद की स्थापना करनी है तो हिंदू नर के पक्षपाती दिमाग को ठोकर मार मार के बदलना है। नर नारी के बीच में बराबरी कायम करनी है तो नर नारी समानता के लिए नारी सशक्तिकरण पर बल देना होगा। लोहिया जी का कहना था कि **"नारी को गठरी के समान नहीं बल्कि इतना शक्तिशाली होना चाहिए कि वक्त आने पर पुरुष को भी गठरी बना अपने साथ ले चले"** भारतीय संस्कृति में नर नारी असमानता जन्म से ही शुरू हो जाती है। नर का जन्म सुखद और नारी का जन्म दुखद समझा जाता है। इसका मुख्य कारण भारत में व्याप्त दहेज प्रथा है। वधू की योग्यता, शिक्षा, सुंदरता आदि महत्वहीन है, विवाह में वर पक्ष दहेज की अधिक मात्रा से ही प्रभावित होता है। डॉक्टर लोहिया ने कहा है कि "जिन शादियों का वैभव आत्मा के मिलन में नहीं है, जिसे प्राप्त करने का नव दंपति प्रयास करते हैं, बल्कि बीस लाख कि कंठियो और पचास हजार से भी ज्यादा कीमती साड़ियों में है, ऐसी शादियाँ समाज की बुनियाद पर कलंक के समान है।" दहेज की इस घृणित प्रथा की भर्त्सना के लिए शक्तिशाली लोकमत तैयार करने की आवश्यकता है।

लोहिया जी बहू पत्नी प्रथा के विरोधी थे। उनका मत था कि यदि पत्नी एक पति रख सकती है तो पति को भी एक ही पत्नी रखने का अधिकार होना चाहिए। डॉक्टर लोहिया नर नारी के बीच संबंध में समता चाहते थे। एक पत्नी एक पति का सिद्धांत ही उनके लिए आदर्श था। लोहिया जी ने नारी के लिए एक नया जीवन और एक नया समाज का सपना देखा, जिसमें वे पुरुषों के साथ बराबरी का अधिकार पाएंगी। उन्होंने नारी को एक नेता, एक क्रांतिकारी, एक शिक्षक, एक लेखक, एक कलाकार और एक मानव के रूप में देखने का आह्वान किया। सामाजिक असमानता ही नारी अपराधों का मूल है। सामाजिक चेतना मैं जब नारी समानता का भाव समाहित होगा तो महिलाओं पर होने वाले अपराध स्वयं दम तोड़ देंगे।

वर्तमान राजनीतिक परिद्रश्य मैं महिलाओं की भागीदारी बहुत सीमित है। सरकार, संसद, विधानसभा, विधान परिषद, न्यायपालिका आदि सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाले उच्च पदों पर महिलाओं की भागीदारी बहुत ही कम है। लोहिया जी का मानना था कि नारी के सक्रिय सहयोग के बिना राजनीति अपूर्ण है। राजनीति में नर नारी को समान सक्रिय भाग लेना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र में महिला की हिस्सेदारी होनी चाहिए। राम मनोहर लोहिया ने जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की समान सहभागिता सुनिश्चित करने की लड़ाई लड़ी। लोहिया इस विषय में पूरी तरीके से आश्वस्त थे कि भारत की अवनति के लिए जातिगत और लैंगिक भेदभाव मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। उनका मानना था कि भले ही राजनीति में महिलाओं को आरक्षण दे दिया जाए। लेकिन जब तक महिलाएं सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त नहीं होती हैं तब तक समानता और विकास का सपना कोसों दूर ही रहेगा। लोहिया का ये विचार आज के परिप्रेक्ष्य में बिल्कुल सही साबित होता है क्योंकि हम देख सकते हैं कि महिलाओं की राजनीतिक आजादी पर सामाजिक और आर्थिक स्थिति का कितना ज्यादा प्रभाव पड़ता है। राजनीति में पुरुषों का वर्चस्व इसकी मुख्य बाधाओं में से एक है। लोहिया जी के अनुसार आज का पुरुष अपनी स्त्री को एक ओर तो सजीव, क्रांतिपूर्ण एवं ज्ञानी चाहता है और दूसरी ओर अपने अधीनस्थ रखना चाहता है। पुरुष की यह परस्पर विरोधी भावनाएं बहुत ही बिडंबनापूर्ण, काल्पनिक एवं वास्तविक है। क्योंकि परतंत्रता की स्थिति में ज्ञान, सजीवता एवं तेज का प्रादुर्भाव कैसे हो सकता है। लोहिया ने नारी को एक स्वतंत्र और सक्रिय नागरिक माना, जिसका अपना व्यक्तित्व, अभिरुचि और योगदान है। उन्होंने नारी को राजनीति में भागीदार बनाने के लिए आरक्षण की मांग की और उनकी सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए कई प्रयास किए। उन्होंने नारी के शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, उद्यमिता, संरक्षण और न्याय के अधिकारों को बल दिया। उन्होंने नारी के खिलाफ होने वाले हिंसा, शोषण, भेदभाव और अपमान के विरुद्ध लड़ने के लिए उन्हें प्रेरित किया।

भारतीय नारी के अधिकारों और स्थिति को सुधारने के लिए अनेक प्रयास किए। उनके अनुसार, नारी की आर्थिक समानता का मतलब यह नहीं है कि वह पुरुषों के साथ बराबरी का काम करे, बल्कि यह है कि वह अपनी इच्छा और योग्यता के अनुसार काम कर सके, और उसका काम उसकी आय और सम्मान का स्रोत बने। डॉ. लोहिया ने नारी को घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल के लिए बाध्य नहीं माना, बल्कि उन्होंने कहा कि ये कार्य पुरुषों और नारियों दोनों के लिए सामान्य हैं, और इनका बोझ दोनों के बीच बराबर बांटना चाहिए। घर के कार्यों के संबंध में भी लोहिया जी समता चाहते थे। उनका कहना था कि अगर औरत की जगह रसोई घर में हो तो आदमी की जगह पालने के पास होनी चाहिए। लोहिया के समाजवाद मैं नारी को संपत्ति रखने, रोजगार और कारोबार करने एवं उससे संबन्धित सभी फैसले स्वतन्त्रता पूर्वक लेने का अधिकार है। उन्होंने नारी को शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रोत्साहित किया, और उनके लिए आरक्षण और अन्य सुविधाओं की मांग की। डॉ. लोहिया के विचारों का उद्देश्य था कि नारी को आर्थिक रूप से स्वावलंबी, सामाजिक रूप से सम्मानित और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाया जाए, ताकि वह अपने जीवन के हर पहलू में अपने अधिकारों का दावा कर सके। लोहिया के नारी की आर्थिक समानता पर विचार आज भी प्रासंगिक हैं। भारत में अभी भी नारी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, असुरक्षा, अनैतिकता, अन्याय आदि। इनके उत्तरण के लिए लोहिया के विचारों का अनुसरण करना आवश्यक है। नारी को आर्थिक रूप से स्वावलंबी और सम्मानित बनाने के लिए उन्हें शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता, आर्थिक सहायता, बैंकिंग सुविधा, आधारभूत सुविधाएं, न्यायिक सहायता आदि प्रदान करने होंगे। नारी को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। नारी के अधिकारों का सम्मान करना होगा। नारी के खिलाफ होने वाले हर प्रकार के अत्याचार, शोषण, भेदभाव और अपमान को रोकना होगा।

निष्कर्ष

राम मनोहर लोहिया ने अपने जीवन में सामाजिक न्याय और समाज में समरसता के लिए समर्पित रहा। उन्होंने नारी सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण माना और उस पर अपने विचारों को आधारित किया। उनका दृष्टिकोण

नारी को समाज के सकारात्मक बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका देने की दिशा में था। लोहिया ने नारी सशक्तिकरण को अपने राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। उनका मानना था कि समाज में समरसता का संचार होने के लिए, नारी को सकारात्मक रूप से संलग्न करना आवश्यक है। उन्होंने समाज में नारी के साथ समानता की बात की और उन्हें समाज के हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाने का अधिकार दिये जाने की पैरवी की । राम मनोहर लोहिया ने नारी सशक्तिकरण के लिए शिक्षा को माध्यम बनाने का विचार दिया। उनका मानना था कि शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपाय है जिससे नारी समाज में अपनी जगह बना सकती हैं और अपने पूरे व्यक्तित्व को बहुतंत्री रूप से विकसित कर सकती हैं।

लोहिया ने कहा कि नारी को समाज में उच्चतम शिक्षा एवं समरसता के साथ समाहित रहने का हक है, और इसके लिए समाज को बदलना आवश्यक है। लोहिया जी ने भारतीय समाज में महिलाओं के स्थान को सुधारने और सशक्तिकरण करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया। उन्होंने नारी शक्ति को बढ़ावा देने के लिए अनेक संगठनों की स्थापना की और महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी।

लोहिया के नर नारी संबंधी विचार अपने आप में क्रांतिकारी विचार थे आज तक समाज की पितृसत्तात्मक संरचना जिस औजार के सहारे स्त्री को अपने अधीन रखती आई है, लोहिया उसी पर चोट करते हैं। भारतीय समाज में पुरुष परस्पर विरोधी मानसिकता को पाले हुए है। उसे एक ओर तो उसकी संतान को पढ़ा लिखा कर आधुनिक बनाने वाली मां चाहिए यानी एक ऐसी औरत जो बुद्धिमान, शिक्षित ,और चतुर हो दूसरी ओर से भारतीय संस्कृति का वाहक भी बने यानी संस्कृति में औरतों की जो भूमिका तय की गई है, वह उसका निर्वहन करें। आशय यह है कि आज्ञाकारी हो और उसके कब्जे में रहे। परंतु बिना स्वतंत्र चिंतन के ऐसी नारी का अस्तित्व ही बेईमानी है जो बुद्धिमान और शिक्षित हो और समाज के उत्थान में योगदान दे पाये ।

डॉ राम मनोहर लोहिया ने उनके विचारों माध्यम से हमे वो संजीवनी प्रदान की है जिसके उपयोग से सशक्त नारी और उन्नत समाज का स्वप्न साकार करने मैं सफल हो सकते है आवश्यकता बस इतनी है कि हम उन्हे पूर्ण मनोयोग से आत्मसात करें और समाज को भी आत्मसात करने हेतु हर प्रकार से प्रेरित करे । ईसीसे हम सर्वसंपन्न एवं खुशहाल नव भारत का निर्माण सुनिश्चित कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Rammanohar Lohia, Caste System, Hyderabad, RML Samata Vidyalaya, 1986, pp. 102-105.
2. N.C. Mehrotra, Lohiaâ€"A Study, Atma Ram & Sons, Delhi, 1978, p. 181.
3. Rammanohar Lohia, Caste System, Hyderabad, RML, Samata Vidyalaya, 1986, pp. 145-146
4. Rammanohar Lohia, Women, Harijans and Muslims, Vol. 2, No. 8, March 1958.

❖◆❖